ही सामाजिक लाभ अधिकतम हो सकता है। अधिकतम सामाजिक लाभ की व्याख्या कुल सामाजिक त्याग तथा कुल सामाजिक लाभ वक्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। अधिकतम सामाजिक लाभ उस बिन्दु पर प्राप्त होगा जहाँ कुल सामाजिक लाभ तथा कुल सामाजिक त्याग का अन्तर सबसे अधिक है। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

कर तथा व्यय की इकाइयाँ

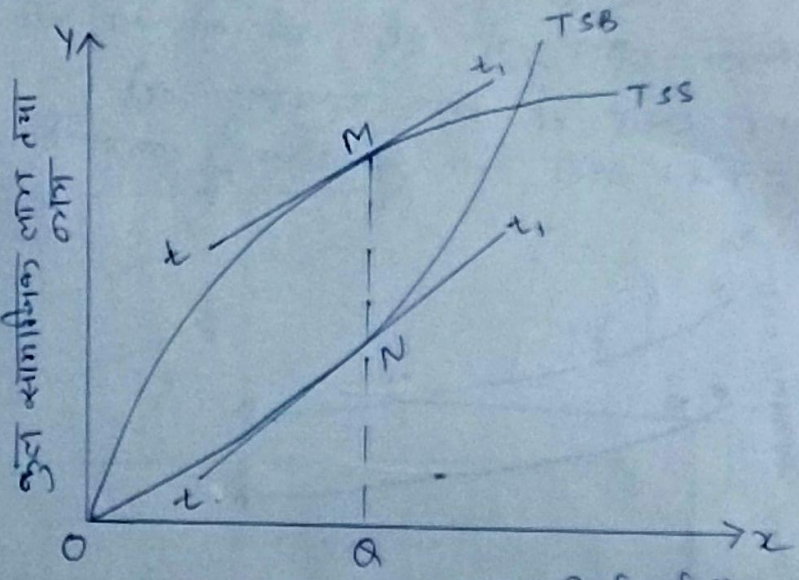

उपर्युक्त चित्र में TSB वक्र सार्वजनिक व्यय से प्राप्त कुल सामाजिक लाभ को दर्शाता है जिसका ढाल ऊपर की ओर उठता हुआ प्राप्त होता है जो दर्शाता है कि जैसे जैसे सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती जाती है कुल सामाजिक लाभ बढ़ता जाता है किन्तु एक बिन्दु के बाद घटने लगता है। इसके विपरीत TSS वक्र कर से उत्पन्न कुल सामाजिक त्याग को प्रदर्शित करता है और कर की वृद्धि मात्रा के साथ कुल त्याग बढ़ता जाता है किन्तु एक बिन्दु के बाद कुल त्याग बहुत तीव्र गति से बढ़ने लग जाता है।

यहाँ TSB तथा TSS वक्र का अन्तर शुद्ध सामाजिक लाभ को दर्शाता है जो MN रेखा से दर्शाया गया है।

अतः सरकार को OQ मात्रा में व्यय करना चाहिए ताकि अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए व्यय करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना पड़ता है –

(a) प्रत्येक व्यय से सीमांत उपयोगिता समान रहनी चाहिए अर्थात किसी मद पर आवश्यकता से अधिक व्यय करना और दूसरी मद की उपेक्षा कर देने से सामाजिक लाभ में वृद्धि नहीं की जा सकती।

(b) व्यय ऐसा हो कि उत्पादन बढ़े।

इसे चित्र द्वारा भी स्पष्ट कर सकते हैं –

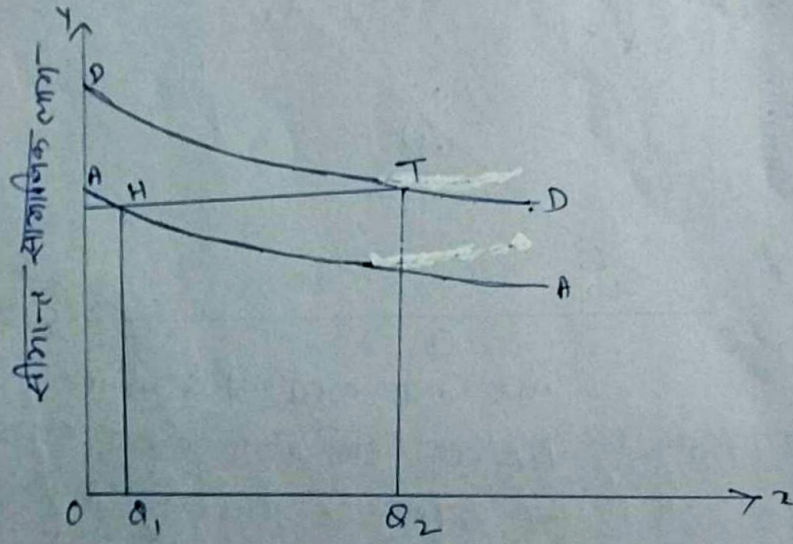

उपयुक्त चित्र में AA वक्र कृषि पर किया गया सार्वजनिक व्यय तथा DD वक्र सुरक्षा पर किये गए सार्वजनिक व्यय को दर्शाता है। दोनों से प्राप्त सीमांत सामाजिक लाभ की स्थिति $HQ = TQ_2$ होगा। अतः कृषि पर OQ_1 तथा सुरक्षा पर OQ_2 मात्रा में व्यय किए जाए तो दोनों से सीमान्त सामाजिक लाभ समान मात्रा में प्राप्त होगा और यही अधिकतम सामाजिक लाभ होगा।

अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए कर लगाते समय भी निम्न बातों को ध्यान में रखना

पड़ता है —

(a) करारोपण कर देने की क्षमता के आधार पर किया जाना चाहिए। ताकि सभी व्यक्तियों पर समान रूप से कर का भार पड़े।

(b) करारोपण के साथ काम करने एवं बचत करने की इच्छा एवं योग्यता पर बुरा प्रभाव न पड़े।

इसे रेखाचित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है —

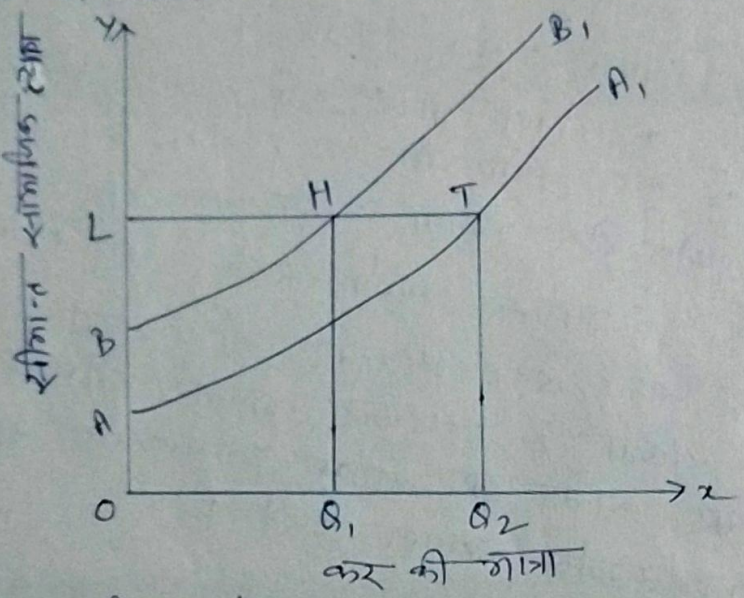

उपयुक्त चित्र में AA₁ तथा BB₁ वक्र A तथा B व्यक्तियों द्वारा कर अदा करने से सीमांत सामाजिक त्याग को प्रदर्शित करता है। कुल त्याग उसी अवस्था में न्यूनतम होगा जहाँ A तथा B का सीमांत सामाजिक त्याग बराबर होगा। अतः सरकार A व्यक्ति पर OQ_2 तथा B व्यक्ति पर OQ_1 के बराबर कर लगायेगी क्योंकि यहाँ $TQ_2 = HQ_1$।

यद्यपि इस सिद्धान्त का बहुत अधिक महत्व है किन्तु व्यवहार में अनेकों कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं जो निम्नलिखित हैं —

सर्वप्रथम करों से प्राप्त सीमांत अनुपयोगिता तथा राजकीय व्यय से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता का पता लगाना तथा इसके सामंजस्य स्थापित करना बहुत ही कठिन कार्य है।

सरकारी व्यय का उद्देश्य सामान्यतया

भविष्य में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाना होता है। परन्तु ऋण कार्य के लिए जो राशि संग्रह की जाती है, उसे वर्तमान में ही वसूल किया जाता है। इसप्रकार करों का प्रभाव तत्काल देखा जा सकता है। जबकि ऋण का प्रभाव भविष्य में पड़ता है। ऐसी स्थिति में भी करों की वर्तमान अनुपयोगिता तथा ऋण से भविष्य में मिलने वाली उपयोगिता का अनुमान लगाना कठिन कार्य है।

करारोपण द्वारा प्राप्त रकम के भार से समाज के कुछ वर्गों को लाभ होता है। इस लाभ को भी ठीक ठीक आंकना कठिन कार्य है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद बहुत हद तक इस सिद्धान्त को व्यवहारिक रूप दिया जा सकता है। सरकार अपनी आर्थिक नीतियों पर विचार करते समय अधिकतम सामाजिक लाभ का विशेष ख्याल रखे।

—x—

Dr Sandhya Rani
Dept of economics
Maharaja college